

अर्थनैतिक वास्तवता ओ भारतीय श्रमनीति

श्रमितीमोहन मुखर्जी

१. ओ कथा आज प्राय सर्ववादी सन्मत ये वस्तुतः कोन निर्धारित परिकल्पना आनुयायी अर्थनैतिक विकाश करते हूँले कोन ना कोन ओक रकमेर सुसंगत श्रमनीति अपरिहार्य. यदिओ श्रममूल्य सम्पर्क परिकल्पना परिषदेर मतामतेर गुस्त्व खुबधि बेशी, श्रममूल्येर समस्या बलते अवश्यधि ओकटि मात्र समस्या बोझाय ना. काजेधि श्रमनीति बलते केबल मात्र श्रममूल्य निर्धारण सम्पर्क स्थिर सिद्धान्त हूओया ओ कथा मने करा मूल हूँबे. श्रमजीविदेर साधारण अर्थनैतिक अवस्था छाडाओ, विभिन्न अुत्पादन क्षेत्रे ओमन कि विभिन्न भौगलिक विभागेर मध्ये श्रममूल्येर तारतम्येरओ यथेष्ट गुस्त्व आछे. विभिन्न अुत्पादन क्षेत्रे वा प्रदेशे श्रममूल्येर बैचित्र सम्पर्क किछु गवेषणामूलक काज भारतवर्षे ह्येछे. तार कारण निर्दोष करते गेले सम्भवत देखा याँबे ये, ये समस्त तथ्यादिर साहाय्ये ओधि घरणेर गवेषणा करा सम्भव तार किछु किछु अन्तत साधारण भाबे सरकारी सूत्रे पाओया याअ, यदिओ ओमि सब तथ्य नानादिक दिये अत्यन्त सीमाबद्ध. सामग्रिकभाबे श्रमनीतिर क्षेत्रे ओसे किन्तु देखा याअ ये परिकल्पना परिषदेर मतामतेर मध्ये ये ओकटा भासाभासा भाव आछे शुधु ताधि नय, प्रसङ्ग विशेषे ताँदेर श्रमनीति सम्पर्कित प्रतिपाद्यगुलि कार्यत द्वार्थबोधक. प्रथमत न्याज्य श्रममूल्य^१ ओ प्रयोजन अनुयायी नून्यतम श्रममूल्य^२ दु'घरणेर कथाधि बला ह्येछे. किन्तु ओधि घरणेर कोन रकम मत प्रकाशेर क्षेत्रेधि सरकारी श्रमनीति ठिक घराछोंयार मध्ये आसेनि, कारण सेधि ओकधि सङ्गे बले राखा ह्येछे ये न्याज्य वा प्रयोजन अनुयायी नून्यतम श्रममूल्य कोनटाधि सठिक भाबे निर्धारण सापेक्ष नय. याधि होक ओमि सब आलोचनार मध्ये दिये ओकटा कथा परिस्कार भाबे देखा याअ ओवं कथाटा ओधि ये परिमाणवाचक अुद्देशेर बांधाधरार मध्ये आसते सरकार नाराज. ताँदेर श्रमनीति बलते तूपक्षीय परामर्श परिषद मार्फत श्रमिक ओ मालिकदेर मध्ये यथा सम्भव सद्भाव रक्षार ब्यवस्था करा. ^३ केबलमात्र विशिष्ट बिबाद बिसम्बादेर क्षेत्रे आलोचना ओ आपोधि मार्फतधि ये ता सम्भव से बिषयओ ताँरा स्थिर सिद्धान्त.

२. कोन रकम परिमाणवाचक लक्षेर अनुपस्थितिते कि करे सरकारी श्रमनीतिर साफल्य निर्धारण करा येते पारे ता बोझा शक्त. विशेष करे ये क्षेत्रे कतूपक्ष आगेर येकेधि तूपक्षीय परामर्श परिषदेर कार्यकारिता सम्बन्धे स्थिर सिद्धान्त. ओ याबत ये श्रमनीतिर अनुशीलन करा ह्येछे तार साफल्य सम्बन्धे कतूपक्ष किसेर भित्तिते ये ओधि भाबे स्थिर सिद्धान्त हूँते पेरेछेन तार कोन हृदिसधि पाओआ याअ ना. ^४ आभिहोकि, सङ्गठित अुत्पादनेर क्षेत्रे शान्तिरक्षाधि ये

१. भारत सरकार, परिकल्पना परिषद, द्वितीय पंचवार्षिक योजना, १९५६, पृ. ५७९

२. भारत सरकार, परिकल्पना परिषद, तृतीय पंचवार्षिक योजना, १९६१, पृ. २५६

३. भारत सरकार, परिकल्पना परिषद, तृतीय पंचवार्षिक योजना, १९६१ पृ. २५०

४. भारत सरकार, परिकल्पना परिषद, द्वितीय पंचवार्षिक योजना, १९५६, पृ. ५७१